मन की अपार शक्ति

अनुवादक

श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०

प्रिन्सिपल, अग्रवाल विद्यालय कालिज, प्रयाग
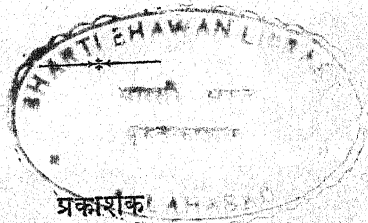
प्रकाशक

छात्रहितकारी, पुस्तकमाला

दारागंज, प्रयाग

तृतीय संस्करण] १६४७ मू० ।=)

भारती-
क्रमिक
विभाग

प्रकाशक
श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
प्रोप्राइटर—छात्रहितकारी पुस्तकमाला
दारागंज, प्रयाग

मुद्रक
सरयू प्रसाद पांडेय 'विशारद'
नागरी प्रेस, दारागञ्ज,
प्रयाग।

निवेदन

जेम्स एलेन और उनकी धर्मपत्नी लिली ने बहुत-सी छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी हैं, जिन्होंने विदेशी नवयुवकों के विचारों में एक विचित्र क्रान्ति उत्पन्न कर दी है और इसलिए वे उन्हें बड़ी आदर और श्रद्धा से पढ़ते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक श्रीमती लिली की लिखी हुई 'Might of the mind' नामक पुस्तक का स्वच्छन्द हिन्दी अनुवाद है। इसमें यह बतलाया गया है कि मनुष्य के भीतर अपार शक्ति है, जिसका अनुभव करके वह जैसा चाहे वैसा बन सकता है। प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है।

आशा है अनूदित पुस्तक का भी विद्यार्थियों में अच्छा प्रचार होगा और इसे पढ़कर वे जैसा चाहेंगे बन सकेंगे।

अग्रवाल विद्यालय, प्रयाग } केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
५—१२—४३

भारती-भवन
क्रमिक
विभाग

विषय सूची

मन की अपार शक्ति

मन को वश में करना

जब तुम्हारा मन इधर-उधर जाने लगे तो उसे उस ओर से खींचकर ऊँचे लक्ष्य की ओर लगाओ—

जेम्स एलेन।

जब कोई साधक ईश्वर की खोज में आगे को बढ़ता है तो उसे सबसे अधिक कठिनाई अपने मन को रोकने में पड़ती है। जो मन को रोकने का अभ्यास कर रहे हैं वे ही इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं। जब हम विचारों का संयम करने बैठते है तो हमें मालूम होता है कि हमारा मन कितना स्वच्छन्द और निरंकुश रहा करता है तथा उसमें सब प्रकार के विचारों के ग्रहण करने की भी कितनी अपार शक्ति रहती है। हमें यह स्मरण करके बड़ा दुख और आश्चर्य होता है कि हमने इधर उधर की निरर्थक बातों में अपना कितना अमूल्य समय नष्ट किया है। यदि इस समय को हम किसी निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर जीवन को ऊपर उठाने वाले विचारों की ओर लगाते तो हमारा चरित्रबल कितना अधिक बढ़ जाता, हमारा हृदय कितना शुद्ध

हो जाता, हमारा प्रभाव कितना बढ़ जाता और हमारी आत्मिक उन्नति कितनी अधिक हो गई होती ।

यदि उपरोक्त कथन की सचाई किसी की समझ में किसी दिन आ जाय तो उस दिन को उसके जीवन का एक बड़ा महत्वपूर्ण दिन समझना चाहिए ।

मन पहिले पहिल अपने ऊपर हाथ नहीं रखने देता । उसकी अवस्था उस बछेड़े की तरह होती है, जो मुँह में पड़ी हुई लगाम को तोड़कर फिर से स्वतन्त्र होना चाहता है । वास्तव में यदि हम मन को अपने वश में करना चाहते हैं तो हमें बड़े धैर्य्य से काम लेना होगा और उसको इधर-उधर जाने से बार-बार रोकना पड़ेगा । सम्भव है निराश होकर हम उसे रोकने का प्रयत्न बन्द कर दें, परन्तु ऐसा करना हमारे लिए बहुत ही घातक होगा ।

मन को रोकने के लिए सबसे पहिले हमें धैर्य्य धारण करने की आवश्यकता है । शीघ्रता करने से सिवाय हानि के लाभ नहीं है । धीरे-धीरे काम करके सफलता प्राप्त करना अच्छा है, किन्तु शीघ्रता करके असफल हो जाना बुरा है । अतएव मन को प्रारम्भ में तङ्ग करने का अधिक प्रयत्न न करो और न उसे एकाग्र करने में अधिक समय लगाओ । सम्भव है, इस प्रकार के व्यवहार में अभ्यस्त न होने के कारण वह थक जाय और

अपने लक्ष्य को प्राप्त न कर सके। वास्तव में सच्चा मनुष्य वही है जो धीरे-धीरे मन को वश में कर लेता है।

मन को एक स्थान पर लगाने का अभ्यास करो। प्रातःकाल का समय इसके लिए सब से उत्तम समय है। दस मिनट से प्रारम्भ करो और फिर बीस मिनट कर दो। एक या दो सप्ताह के बाद आध घण्टे तक ले जाओ। इस प्रकार धीरे-धीरे मन किसी स्थान पर आप से आप एकाग्र होने लगेगा।

मैं तो किसी एक शब्द को ले लेती थी और उसी पर मन को एकाग्र करने का अभ्यास करती थी। उदाहरण के लिए 'सहानुभूति' शब्द ले लीजिए। इस शब्द के महत्व पर विचार कीजिए। दूसरों को सुख पहुँचाने की कितनी शक्ति इस शब्द के भीतर भरी है। इस शब्द का विश्लेषण कीजिए। हर प्रकार से इस शब्द पर विचार कीजिए। सम्भव है, आपका मन हटकर किसी दूसरे विचार में मग्न हो जाय और आप कहने लगें कि अब हम इसी विचार पर ध्यान लगावेंगे, इसमें हमें बड़ा आनंद आ रहा है। किन्तु ऐसा आप न करें। आप उधर से मन को हटाकर फिर 'सहानुभूति' शब्द पर लावें और उसी पर बार-बार लगाते रहें। दूसरे दिन आप दूसरा शब्द लें और विचार करें कि उसके प्रयोग से हमारा जीवन कितना ऊँचा उठ सकता है। जब तक जीवन को ऊपर उठाने वाले उसके असली तत्व को

आप समझ न लें तब तक उस शब्द को छोड़ें नहीं। शब्दों से आप सिद्धान्तों पर आ जाइए। धीरे-धीरे आप विचार करते-करते इन सिद्धान्तों का पालन अपने चरित्र में करने लगेंगे और आपको पता भी न चलेगा। याद रखिए, जैसा हम सोचते हैं वैसा ही हम निस्सन्देह हो भी जाते हैं।

एक युवा लड़की को सुन्दर लिखने का अभ्यास न था। उसे मैं जानती थी। स्कूल में उसके लिखने पर सब हँसते थे और उसकी अध्यापिका एक दम इस बात पर निराश हो गई थीं कि उसका लिखना कभी सुन्दर हो सकता है। वे सब यही आशा कर रही थीं कि उसका लिखना सदैव बच्चों की लिखावट की तरह रह जायगा। लड़की निराश हो रही थी। एक दिन उसकी एक सखी ने, जिसके साथ रहने के लिए वह किसी छुट्टी में गयी थी, उससे पूछा, "आप किस प्रकार के हस्ताक्षर लिखना चाहती हैं?" लड़की ने हताश होकर उत्तर दिया कि मैं कुछ नहीं जानती, मुझे लिखना भार-सा मालूम पड़ रहा है, उन कापियों को देखने से ही मुझे बड़ी घृणा मालूम होती है।

उसकी सखी ने कहा, 'उन कापियों की तो तुम परवाह न करो, मुझे तो तुम यह बताओ कि किसका लिखना तुम्हें बहुत पसन्द है?"

लड़की ने उत्तर दिया कि कुमारी बी का लिखना बड़ा

सुन्दर है। मेरी बड़ी इच्छा है कि मेरा लिखना भी उसी के लिखने की तरह हो जाय। किन्तु मेरे लिए ऐसी आशा करना व्यर्थ है, क्योंकि मेरी अध्यापिकाएँ कहती हैं कि तुम्हारा लिखना कभी सुन्दर हो ही नहीं सकता।

उसकी सखी ने कहा, "देखो, तुम्हारी अध्यापिकाएँ क्या कहती हैं, इसे तो तुम भूल जाओ। उन कापियों की और उस कष्ट की भी, जो तुम्हें होता है, तुम परवाह न करो। तुम अपना मन एक मात्र उस लिखने पर लगाओ जिसको तुम सब से अधिक पसन्द करती हो। कुमारी जी के अक्षरों को बार-बार देखो, उनके घुमाव को ध्यान से देखो, किस तरह सुन्दरता के साथ वे बनाए गए हैं, इस पर भी विचार करो। जब तुम भी कलम उठा कर लिखने लगो तो अपने मन में कहो कि इसी प्रकार के अक्षर मैं भी लिखूँगी, एक दिन मैं भी इतना ही सुन्दर लिख सकूँगी। दिन में कई बार इसी प्रकार का ध्यान करो और विचारो कि मैं उसी प्रकार के सुन्दर अक्षर लिख रही हूँ और अन्त में अब मेरा प्रयत्न सफल होगा तो मुझे कितनी प्रसन्नता होगी।"

लड़की ने ऐसा ही करने का वादा किया। सुन्दर अक्षर लिखने का विचार उसके हृदय में धँस गया और उसमें उसे आनन्द आने लगा। छुट्टी समाप्त हो जाने पर जब वह फिर

स्कूल गई तो वह अपनी अध्यापिकाओं से भी अधिक सुन्दर लिखने लगी। जिस लड़की की नकल उसने किया था उसी के ऐसा सुन्दर लेख वह भी लिखने लगी। यह इस बात का उदाहरण है कि मन को एकाग्र बनाने और एक आदर्श अपने सामने रखने से निराश व्यक्तियों को भी किस प्रकार सफलता मिल सकती है।

जेम्स एलेन ने कहा है, "मनुष्य अपने अच्छे या बुरे विचारों के कारण अच्छी या बुरी हालतों में रहते हैं। यदि वे चाहें तो इस संसार को नरक बनावें और यदि चाहें तो इसी को स्वर्ग बनावें। विचार के जिस रंग के चश्मे से वे संसार को देखेंगे, संसार उनको उसी रंग का दिखाई पड़ेगा।"

जिस प्रकार एक आदर्श के बिना वह नौजवान लड़की सुन्दर लेख नहीं लिख सकी उसी प्रकार आत्मा की उन्नति के लिए भी एक आदर्श चरित्र की अत्यन्त आवश्यकता है। पहिले अच्छी तरह परीक्षा करके अपने आपको जानना चाहिए। मनुष्य का मन बड़ा ही दुर्ज्ञेय है, अपने को जानना भी उतना सुगम नहीं है जितना दिखलाई पड़ता है। तथापि यदि हम मन को वश में करना चाहते हैं तो सब से पहिले हमें अपने आपको जानना चाहिए। हम अपनी गहरी जाँच-हड़ताल करें, अपनी कामनाओं का विश्लेषण करें, अपनी इच्छाओं को तौलें और

फिर अपने से यह प्रश्न करें "हमने ऐसा क्यों कहा था ? और हमने वैसा क्यों किया था ?" प्रति दिन और प्रति घंटे हम अपने काम की परख करते रहें और यदि कोई भूल हमसे हुई हो तो उसको मानने में न हिचकें। क्या ऐसे करने के लिए आप तैयार हैं ? यदि हैं तो आत्म-परीक्षा में प्रति दिन कुछ समय लगाइए और मालूम कीजिए कि (वास्तव में) आप क्या हैं और कहाँ हैं ? अपनी अन्तरात्मा से अपने दोष कहने में किसी प्रकार का भय न करो। उससे सब बातें सच-सच कह दो। याद रक्खो, तुम जितनी ही सचाई से अपनी परख करोगे उतनी अधिक मात्रा में अपने गुण तुम बाहर लाते जाओगे और तुम्हारी आत्मा उतनी ही अधिक उन्नति करती जायगी। जब किसी बात का हमें पूर्ण ज्ञान नहीं होता, अथवा जब किसी मामले में हम आगा-पीछा करते रहते हैं तभी हमारी मृत्यु होती है।

जब हम सचाई से आत्मपरीक्षा कर चुकें तब हमें अपना आदर्श निश्चित करना चाहिए और उसे सामने रखकर उसी पर बराबर विचार करना चाहिए। यदि हमारा मन निश्चित आदर्श से इधर-उधर जाय तब भी अपने उद्देश्य को हम न छोड़ें। इस प्रकार उद्योग करते हुए धीरे-धीरे हम अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुँच जायँगे और अन्त में अपने उद्देश्य की पूर्ति के रूप में हमें इसका मनचाहा पुरस्कार मिलेगा।

मन की रचनात्मक शक्ति

"जब आप सचाई को पहिचान लेंगे तो आपके दिल को परेशानी न होगी क्योंकि वह छिपी हुई भीतरी शक्तियों को प्रगट कर देगी।"

"यदि आप किसी वस्तु की प्राप्ति के सम्बन्ध में दृढ़ निश्चय कर लेंगे तो वह आपको मिल जायगी और आपके मार्ग में प्रकाश होने लगेगा।"

—जाब

I am the owner of the Sphere.
Of the seven stars, and the solar year,
Of Caesar's hand, and Plato's brain.
Of Lord Christ's heart, and Shakespeare's strain."

मैं सम्पूर्ण पृथ्वी मण्डल का स्वामी हूँ। सप्त तारामण्डल और सूर्य की वार्षिक परिक्रमा का मैं ही संचालक हूँ। मैं सीजर का हाथ और प्लेटो का मस्तिष्क हूँ। मैं ईसा का हृदय और शेक्सपियर का गान हूँ।

मनुष्य की रचनात्मक शक्ति कितनी बड़ी है। इस शक्ति को हम केवल विचार करने की ही शक्ति क्यों कहें। विचार

करने का अर्थ है नई-नई बातें उत्पन्न करना। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन भर हम नई-नई बातें उत्पन्न करते रहे और हमें मालूम तक न हुआ। हमारी धारणा थी कि नवीन-नवीन मौलिक बातें पैदा करने की शक्ति, जो एक ईश्वरीय देन है, बड़ी दुर्लभ और असाधारण वस्तु है और सम्भव है किसी समय कठिन परिश्रम के बाद वह हमें उसी तरह मिल जाय, जैसे कोई वस्तु बाहर से मिल जाया करती है। कितनी विचित्र और आश्चर्यजनक बात है कि जिस शक्ति की हम इतने समय से खोज कर रहे थे वह हर समय हमारे भीतर ही मौजूद थी। हमें क्या मालूम कि वह शक्ति मन की एकाग्रता से हमें मिल सकती थी और उसके उचित प्रयोग से हमारा कल्याण हो सकता था। वह नदी के जल की तरह उधर तो नष्ट भ्रष्ट हो रही थी और इधर हमारा जीवन योंही बिना सोचे-समझे बीत रहा था और हमारे दिन बेकार जा रहे थे।

इसके अतिरिक्त मेरा यह विश्वास है कि हमारी यह शक्ति सदुपयोग में न आकर अनजाने दुख पैदा करने में भी लगी। हमने समझ रक्खा है कि दुख, सुख, हानि, लाभ और बीमारी ये तो हमारे भाग्य में पहिले से ही निर्दिष्ट हैं, जिनका भोगना हमारे लिए अनिवार्य्य है। अपने इसी विश्वास के कारण हमने इन बातों पर अपने मन को लगाया और दुःख, सुख आदि पैदा

कर लिए । लेकिन याद रखिए, 'मन अच्छे और बुरे विचारों को स्वयम् पैदा करता है' इस कथन के अनुसार सुखदाई परिस्थितियों को उत्पन्न करने की शक्ति हमारे हाथ में है, किन्तु साथ ही यदि हम मन को एक बछेड़े की तरह विषय वासना, क्रोध, भय, घबड़ाहट आदि दुर्गुणों में दौड़ाते रहें तो वह हमारे लिए दुखदाई परिस्थिति ही उत्पन्न करेगा । उसे इस प्रकार दौड़ाना भी हमारे ही हाथ में है । विषय, दुख और बीमारी पैदा करते हैं । क्रोध से आत्मा कलुषित होता है और शरीर निस्तेज । इससे जीवन दुःखपूर्ण रहता है और बहुत से रोग और कष्ट उत्पन्न होते हैं । डर और घबड़ाहट से जीवन में असफलता और द्रव्य की कमी रहती है और अन्त में आपत्ति और दीनता मनुष्य को जीवन भर झेलनी पड़ती है ।

एक बार किसी पहाड़ी के नीचे एक छोटी नदी बह रही थी । किसी समय वह एक ऊँची पहाड़ी से निकल कर समुद्र में गिरी थी और सैकड़ों वर्षों तक वेग से बहा करती थी । किन्तु इस समय उसके क्षीणकाय होने के कारण उसकी पुरानी शक्ति, जो प्रायः लुप्त हो गई थी, किसी को मालूम न थी । एक दिन किसी बुद्धिमान् मनुष्य ने उसकी ओर ध्यान दिया और सोचा कि यदि इसके जल का नियन्त्रण उचित ढङ्ग से किया जाय तो इसमें फिर से वेग लाया जा सकता है । उसने इस काम को

अपने हाथ में लिया। उसने बाँध बँधवाये और बड़े बड़े हौज़ बनवाए, उसने इञ्जनघर और पनचक्कियों का प्रबन्ध किया। थोड़े ही समय में वह छोटी नदी, जो बहुत समय तक सूखी पड़ी हुई थी, अब बड़े वेग से बहने लगी। इसके फलस्वरूप उससे सैकड़ों चक्कियाँ चलने लगीं, जिनसे आटा पिसकर लोगों को मिलने लगा, गहरे बड़े-बड़े हौज पानी से भरे जाने लगे, जिनसे जनसमूह को काफी पानी सुलभ हो गया और बहुत से बिजलीघर चलने लगे जिनसे शहर की गलियाँ और जनता के घर बिजली की रोशनी से जगमगाने लगे। ऐसा (चमत्कार) क्यों हुआ, क्योंकि एक मनुष्य ने अपनी कुछ बुद्धि लगाई थी। सैकड़ों लोगों ने उस छोटी नदी को देखा था किन्तु वे कुछ भी न कर सके थे, क्योंकि न तो उनमें कल्पना थी और न वे बुद्धि का प्रयोग कर सकते थे। उनके विपरीत, एक व्यक्ति ने उसे देखकर उसकी भीतरी शक्ति का अनुभव किया और वास्तव में जैसा चित्र अपने मन में बनाया वैसा करके दिखाया। मन भी इस छोटी नदी के समान इधर-उधर निरर्थक बहता रहता है और साधारणतया मनुष्य को उसकी शक्ति का पता भी नहीं चलता। किन्तु लोग अब जग रहे हैं और मन की अपार शक्ति पर विचार करने लगे हैं। उनके हृदयों में प्रकाश का संचार होने लगा है। अब वे मन की शक्ति द्वारा अपने जीवन को अधिक सार्थक और अधिक प्रसन्न बनाने

का उद्योग करने लगे हैं। उनको अब इस बात का ज्ञान होने लगा है कि संसार-सागर से भाग्य और परिस्थितियों की लहरें, जहाँ वे चाहें वहाँ, एक लकड़ी की तरह हमें नहीं फेंक सकतीं; हमारा भाग्य हमारे हाथ में है; परिस्थितियों को अनुकूल अथवा प्रतिकूल बनाना हमारा काम है; मन पर हमारा पूरा अधिकार है; हम अपने विचारों को जैसा चाहें वैसा बना सकते हैं; हम उनको व्यर्थ की बातों में न लगाकर अच्छे कामों में लगा सकते हैं; हमारे भीतर एक ऐसी शक्ति है जिसका यदि उचित प्रयोग किया जाय तो हमें संसार भर का धन और सुख मिल सकता है!

जब हम इस सचाई के महत्व को समझते हैं तो हमें बड़ा आनन्द आता है। हमें यह जानकर और भी अधिक प्रसन्नता होती है कि हमारा जीवन हमारे पास रहने वाले लोगों के जीवन की तरह पूर्ण सुखी हो सकता है। हमारी आँखें खुल जाती हैं और हमारी समझ में यह बात आ जाती है कि हमारा जीवन अभी तक सुखी इस कारण नहीं था कि जो सुख स्वयं हमारे पास आना चाहता था उससे हम बिलकुल अनभिज्ञ थे। हमारी आँख बन्द थीं और हम उस सुख को नहीं देख रहे थे। हमें सूर्य्य की रोशनी का भान भी नहीं था। हम समझे हुए थे कि ईश्वर ने हमें इस रोशनी को बहुत कम दिया है और दूसरों को बहुत अधिक। यद्यपि हम सदैव यही देखते हैं कि सूर्योदय सब

के लिए होता है और सभी उससे यथेष्ट रूप में गरमी और रोशनी प्राप्त कर सकते हैं। हम कभी नहीं सोचते कि जिस हवा में हम साँस लेते हैं और जिसके बिना हम एक मिनट भी नहीं जी सकते वह कहाँ से आती है। हम बहुत कम सोचते हैं कि हमें रोटी खाने को और पानी पीने को कहाँ से मिलता है। तब भी हम देखते हैं कि खाने-पीने की सारी सामग्री हमारे सामने मेज पर इकट्ठी हो जाती है। इस बात पर थोड़ा विचार कीजिए तो आपको यह जानकर बड़ा आनन्द होगा कि हवा, रोशनी, भोजन और जल ही प्राप्त करने के हम अधिकारी नहीं हैं, किन्तु संसार की हर एक अच्छी वस्तु बड़ी सुगमता से हमें वैसे ही मिल सकती है जिस प्रकार वह दूसरों को मिला करती है।

जो कुछ हमारी आत्मा चाहती है, जो कुछ हमारा दिल चाहता है, जो कुछ प्राप्त करने का हम प्रयत्न करते हैं अथवा जिस उद्देश्य की पूर्ति हम करना चाहते हैं, वह सब कुछ हमें मिल सकता है और वह सब कुछ किसी को भी मिल सकता है, शर्त केवल यही है कि हम गम्भीरता पूर्वक विचार करें और लगन, श्रद्धा और अध्यवसाय के साथ काम करें।

"यदि वास्तव में सचाई के साथ तुम मेरी खोज करोगे तो मैं निस्सन्देह तुमको मिलूँगा। यदि सचाई के साथ तुम मुझसे कोई वस्तु माँगोगे तो वह तुम्हें अवश्य दी जायगी। ढूँढो, मैं तुम्हें अवश्य मिलूँगा। दरवाजा खटखटाओ, वह तुम्हारे लिए अवश्य खोला जायगा। जो माँगता है वह पाता है।"

(बाइबिल से)

विचार कीमियागर (रसायनी) है

जहाँ तक मनुष्य जाति से सम्बन्ध है वहाँ तक संसार में सबसे बड़ी शक्ति 'विचारों' की है। विचारों के द्वारा ही मनुष्य ऊपर उठता है और विचारों के द्वारा ही मनुष्य नीचे गिरता है। लोग कहते हैं कि अपने अफसरों की मेहरबानी से या भाग्य से अमुक व्यक्ति को अपने साथ काम करने वालों के मुकाबिले में तरक्की मिल गई; किन्तु ऐसी बात नहीं है। वास्तविक तरक्की या वास्तविक शक्ति मनुष्यों को अपने विचारों से मिला करती है।

"इस समय (बुरा या भला) जैसा मनुष्य है, वह अपने विचारों से बना है" ऐसा एक महान पुरुष ने कुछ सौ वर्ष पहिले कहा था। आश्चर्य की बात है कि तब से इतना समय बीत गया किन्तु अभी तक उस महापुरुष के कथन की सचाई को अधिकांश मनुष्यों ने नहीं समझा है। यह आश्चर्य और भी अधिक बढ़ जाता है जब मनुष्य कहता है कि अपने चरित्र और भाग्य को निर्माण करने वाले हम स्वयं नहीं हैं; इसकी जिम्मेदारी वंश, परिस्थिति, माँ-बाप, वायुमण्डल या किसी अन्य मानी हुई शक्ति पर है। मनुष्य जब जीवन में असफल होता है तो कहता है इन इन कारणों से मुझे सफलता नहीं मिली।

किन्तु वह अपने दिल की खोज नहीं करता है; वास्तव में वह जीवन में सफल या असफल अपने विचारों के कारण होता है।

"वही मनुष्य बुद्धिमान है जो मन को अपने वश में रखता है। विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष का इन विषयों में सङ्ग बढ़ता जाता है और इस सङ्ग से वासना उत्पन्न होती है। इस वासना की तृप्ति होने में विघ्न पड़ने से क्रोध की उत्पत्ति होती है; क्रोध से अविवेक होता है, अविवेक से स्मृतिभ्रंश, स्मृतिभ्रंश से बुद्धिनाश और बुद्धिनाश (पुरुष का) सर्वस्व नाश हो जाता है।"

एक मूर्ख, बुद्धू और कपटी व्यक्ति का उदाहरण लीजिए। वह अपने विचारों से ऐसा बना है। लचर विचारों ने उसे इतना मूर्ख बना रक्खा है। स्त्री-पुरुषों के चेहरों को देखकर आप फौरन बता सकते हैं कि प्रायः वे बैठे बैठे क्या-क्या सोचा करते हैं।

गरमी के बादल की तरह ऐसे लोगों के मन में बेहूदा विचार एक ओर पैदा हुआ और दूसरी ओर निरर्थक निकल गया। उनका एक विचार एक मिनट तक भी कभी नहीं ठहरता, और सभी तरह के विचारों के लिए उनके मस्तिष्क के द्वार निरन्तर खुले रहते हैं।

उस विषयी पुरुष को देखो जिसने अपने दिव्य चेहरे को

विषय और बुरी आदतों से खराब कर डाला है। जो बुरी भावनाएँ उसके मन में मौजूद हैं वे ही उसके चेहरे पर आपको दिखलाई पड़ेंगी।

ऐसा कहा जा सकता है कि चेहरे को देखकर मनुष्य के विचारों के जानने में भूल हो सकती है, किन्तु ऐसा मैं नहीं सोचती। जिसके मन में पवित्र विचार होते हैं, उसका चेहरा विषयी मनुष्य के चेहरे की तरह नहीं होता। इसी प्रकार जो त्यागी है, उसका चेहरा शराबी के चेहरे की तरह नहीं हो सकता। प्रकृति कभी भी भूल नहीं करती; हमें कौड़ी-कौड़ी अपनी भूलों के लिए चुकाना पड़ता है।

यदि मनुष्य अपनी अपार शक्ति का अनुभव करे तो इस प्रकार की अशान्ति से बच सकता है। लोगों को जमा करो और उनसे कहो "अरे लोगों, तुम्हारे पास अनमोल पारस पत्थर है। तुम एक बड़े बुद्धिमान कीमियागर हो। तुम अपनी अपार मानसिक शक्ति द्वारा अपने जीवन की खराब धातु को शुद्ध सोना बना सकते हो।"

भाइयो, अनुभव करके तो देखो। सम्भव है लोग तुम्हें पागल कहें किन्तु तुम इसकी परवाह न करो। तुम में अपार शक्ति है; इस सचाई का अनुभव करो। मनुष्य मात्र में उसे

एकदम बदल देने वाली यह विचित्र शक्ति मौजूद है, किन्तु वह इसे नहीं जानता।

जब नेता और आचार्य लोग इस शक्ति को नहीं जानते तो जन साधारण इसे किस प्रकार जान सकते हैं। अनेक गिरजा-घरों, अनेक समाजों, अनेक संघों और अनेक मण्डलों की बैठकों में आप सम्मिलित होते हैं, वहां बड़े-बड़े लोगों के व्याख्यान आप सुनते हैं, जिनमें कहा जाता है, यह करो, वह करो। बड़ी-बड़ी धार्मिक पुस्तकों को आप पढ़ते रहते हैं और सभ्य बनने के लिये नाना प्रकार के आप प्रयत्न करते हैं लेकिन उस अमूल्य वस्तु के बारे में आपको कुछ नहीं बताया जाता, जो मनुष्य के हृदय में बन्द है और जो इस बात की प्रतीक्षा में रहती है कि दरवाजे को खोलकर उसे बाहर निकालें।

यदि कोई बहादुर पादड़ी अपने दैनिक धर्मोपदेश के स्थान में जिसका असर (वर्तमान अशान्ति को देखकर कहना पड़ता है) अभी तक लोगों पर बहुत कम पड़ा है, उनसे जोर देकर यह कहे कि घर जाओ और 'मन की शक्ति' पर विचार करो तो इससे कितनी शिक्षा मिले और उपकार हो। ऐसी सुविधा न मिले तब भी लोगों से 'विचार करने' के लिए कहते रहो। जब कोई विचार करने बैठता है तो उसके लिए ऐसा करना सरल है किन्तु जब जनता से विचार करने के लिए कहा जाता है तो

बहुत-सी कठिनाइयाँ सामने आती हैं जिनका हल करना कठिन हो जाता है।

वह समय कब आवेगा जब मनुष्य देखेगा और समझेगा कि हमारा जीवन केवल उपदेश को सुनकर काम करने से नहीं किन्तु मन की शक्ति पर विचार करने और उसके अनुसार काम करने से सफल बन सकता है।

'मनुष्य 'विचार' करके जैसा चाहे वैसा बन सकता है', यह बात कितनी सरल है किन्तु कितनी महत्वपूर्ण है। इससे शताब्दियों से कितना उपकार होता आया है। किसी विषय पर गहराई के साथ कुछ समय तक विचार कीजिये। आपके मस्तिष्क में उसी प्रकार के विचार करने के अणु बन जायँगे। यदि आपके विचार हानिकारक हुए अथवा यदि विचार पापपूर्ण और पतन की ओर ले जाने वाले हुए तो फिर आपको पता चलेगा कि ऐसे-ऐसे विचारों के लिये जो अणु आपने मस्तिष्क में तैयार किये हैं, उनको नष्ट करना और उनकी गुलामी से छुटकारा पाना कितना कठिन है।

जिस प्रकार लोहे की जंजीर एक वस्तु को जकड़ लेती है उसी प्रकार एक विचार भी आपके मन को जोर से जकड़ लेता है। यदि आपके विचार खराब हैं तो उन्हीं के अनुसार आप भी खराब बन जायँगे। आप बच नहीं सकते। यदि आपके

विचार अच्छे और पवित्र हैं तो उन्हीं विचारों के अनुसार आप भी अच्छे और पवित्र बन जायँगे। इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। जैसा मनुष्य विचार करता है वैसा ही वह बनता है।

महात्मा क्राइस्ट का कथन है, "वे धन्य हैं जिनके हृदय शुद्ध हैं (पवित्र आत्मा), क्योंकि ईश्वर के दर्शन उन्हीं को होंगे।"

हरेक मनुष्य को अपने जीवन-इतिहास में यह लिख लेना चाहिए 'भला या बुरा जैसा भी मैं हूँ, उसे मैंने अपने विचारों से बनाया है।" यदि हम इन बातों को समझ लें तो हमसे बढ़कर दूसरा कोई सुखी नहीं है।

इच्छा या महत्वाकांक्षा

इच्छा या महत्वाकांक्षा के लिए मन में जो विचार किया जाता है उसी से इच्छा या महत्वाकांक्षा पैदा होती है। जिस वस्तु के पाने की हम इच्छा करते हैं उस पर विचार करके हमें उसके प्रयत्न में लग जाना चाहिए। हम सोचते हैं कि अमुक वस्तु हमें मिल जाय, किन्तु जाँच करने पर मालूम होता है कि वस्तु पाने की यह हमारी इच्छा प्रबल नहीं होती। हम सोचते हैं कि हम एक आदर्श के लिए प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु जब हम उसके लिए किये गये परिश्रम पर विचार करते हैं तो हमें मालूम होता है कि जी तोड़कर हम परिश्रम नहीं कर रहे हैं। हम कहते हैं कि यदि वह आदर्श हमें प्राप्त हो जाय तो अच्छा है, नहीं तो हमें उसकी कोई परवाह नहीं है। इस ढीलेपन से कोई सफलता नहीं मिलती। इसे हम इच्छा नहीं कह सकते। यह तो एक सनक है। जिस तरह पैदा हुई उसी तरह गायब भी हो गयी। इस प्रकार की लचर इच्छा का हमारे चरित्र पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। यदि कोई मन की शक्ति को प्रबल बनाना चाहता है, यदि कोई संसार में मन की शक्ति द्वारा कोई महान् काम करना चाहता है, यदि कोई कीड़े-मकोड़ों की तरह अपना जीवन नहीं

व्यतीत करना चाहता तो उसे अपने मनरूपी दरवाजे में चंचल इच्छाओं, और कुत्सित विचारों को बिल्कुल घुसने ही नहीं देना चाहिए। जो लोग शङ्कित हृदय से किसी बात की इच्छा एक सप्ताह, एक मास या एक वर्ष तक करते हैं और फिर उसे अधूरा छोड़ कर दूसरी बात की इच्छा करने लगते हैं, उनकी मानसिक शक्ति इतनी क्षीण हो जाती है कि वे अपना मन किसी एक उद्देश्य पर पूर्णरूप से नहीं लगा सकते और अन्त में उनका जीवन असफल रहता है। ऐसे मनुष्यों की हालत उस पुरुष की तरह होती है जिसका वर्णन जेम्स की पुस्तक के पहिले अध्याय में इस प्रकार किया गया है:—

"जिसका चित्त चंचल है वह समुद्र की उस लहर के समान है जो हवा से इधर-उधर टकराया करती है। उसको ईश्वर का कोई प्रसाद नहीं मिलता। अव्यवस्थित मनुष्यों के सब काम अनिश्चित रहते हैं।"

अव्यवस्थित लोगों के मन आज एक बात की इच्छा करते हैं और कल किसी दूसरी बात की। उन की हालत उस जहाज की तरह होती है जिसमें न तो पतवार है और न कुतुबनुमा है। जिसका लक्ष्य किसी बन्दरगाह में जाने का नहीं है और जो चंचल लहरों में पड़ा हुआ इधर-उधर उतराता रहता है। ऐसे लोगों को कभी कोई सफलता जीवन में नहीं मिल सकती।

एक प्रकार की इच्छा और देखने में आती है जिसे पूरी करने के लिए सचाई के साथ लोग प्रयत्न करते हैं किन्तु हमेशा वह यही सोचा करते हैं कि इसमें हमें निराश होना पड़ेगा । कुछ समय हुआ एक सज्जन ने मुझसे कहा कि यदि मेरी एक इच्छा पूरी हो जाय तो मेरा जीवन सार्थक हो जाय किन्तु उसका विश्वास नहीं जमता था कि मेरी यह इच्छा पूरी ही हो जायगी । उसकी इच्छा में निराशा की गन्ध थी । उसने एक दिन कहा कि अब इस इच्छा के पीछे लगा रहना ठीक नहीं है । ऐसी-ऐसी इच्छाओं से कोई लाभ नहीं होता । उनमें अविश्वास का भूत लगा हुआ है इसलिए वे सफल नहीं हो सकतीं । इससे यह न समझ बैठिए कि आँख बन्द करके और मुँह खोलकर इस बात की प्रतीक्षा करते रहिए कि ईश्वर क्या देता है । इच्छा ऐसी बात की करनी चाहिए जिससे हम किसी एक ऊँचे उद्देश्य की पूर्ति कर सकें । जब ऐसी इच्छा आप करेंगे तो एक क्षण भी आप चुप नहीं बैठ सकते । आप उस उद्देय को सामने रखकर अपनी सारी बुद्धि लगाते हुए आगे बढ़ते चले जायँगे और अन्त में आपको इसका पुरस्कार मिलेगा । आप यह न सोचेंगे कि हम बैठे हैं और इस प्रकार बैठे ही बैठे हमारा उद्देश्य पूर्ण हो जायगा ।

प्रायः लोग पूछते हैं कि मान लीजिए, हमें एक खराब वस्तु

प्राप्त करने की इच्छा है। इस सम्बन्ध में मुझे केवल यही कहना है कि आप अच्छी वस्तु को लेकर आगे बढ़िये और तब समझिये कि इस वस्तु की इच्छा आपको थी या नहीं। आप यही कहेंगे कि हाँ हाँ, मैं तो यही वस्तु चाहता था, अरे यह मुझे मिल जाती तो मेरा जीवन सफल होता और मुझे बड़ा सुख मिलता। उस समय खराब वस्तु का प्रश्न ही आपके सामने न उपस्थित होगा। खराब वस्तु को लेकर आगे चलने पर जब अनिष्ट परिणाम उपस्थित होंगे तब आप स्वयं कहेंगे कि यह क्या हुआ, इसके भीतर सुख का भ्रम था किन्तु वास्तव में यह सुख नहीं था।

उदाहरण लीजिए। मान लीजिए आपकी यह इच्छा है कि मेरे पास प्रचुर धन हो जाय और दुनिया मुझे करोड़पती कहने लगे। इस प्रयत्न में जब आप लगते हैं तो आपको बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, चाहे जितना रुपया आपके पास हो जाय, आपको सन्तोष नहीं होता और आपका जीवन अशान्त रहता है। तब आप उधर से अपनी तबीयत को हटाकर सच्चे धन को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, जिससे आपको केवल सुख ही नहीं मिलता किन्तु आपकी आत्मा को भी सन्तोष होता है।

अतएव इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हम बड़ी होशियारी से अच्छी इच्छा उत्पन्न करने का प्रयत्न करें। महात्मा

ईसा के इस कथन के अनुसार चलिए कि ईश्वर के राज्य और उसकी नेकी की खोज करने से दुनिया की सब वस्तुएँ आपसे आप मिल जाती हैं। जब उसके राज्य में किसी वस्तु की इच्छा करेंगे तो वह इच्छा अच्छी ही होगी, हम बहुत सोच समझकर ऐसी ही इच्छा उत्पन्न करेंगे जिससे हम अच्छे नागरिक बनें, दूसरों को लाभ पहुँचा सकें और हमारा जीवन सुखी हो। महात्मा ईसा ने समझ-बूझ कर कहा है कि अच्छी से अच्छी वस्तुओं को पाने की इच्छा करो। उन्होंने वास्तव में 'मन की अपार शक्ति' का पाठ पढ़ाया, जब उन्होंने यह लिखा था—

"मेरे भाइयो, जो वस्तुएँ अच्छी हों, जो ईमानदारी और न्याय से प्राप्त की गई हों, जो पवित्र और सुन्दर हो, जो कीर्ति देने वाली हों, उनपर विचार करो और उन्हें प्राप्त करने की कोशिश करो।"

तुम्हें क्या चाहिए

"माँगने से तुम्हें सब वस्तुएँ मिलेंगी और तुमको पूर्ण सुख होगा।"

—महात्मा ईसा

"मन को शान्त रक्खो। इस बात का अनुभव करो कि संसार बड़ा सुन्दर है और उसमें बड़े-बड़े अमूल्य रत्न भरे हैं। जो तुम्हारे दिल में है, जो तुम चाहते हो, जो तुम्हारी प्रकृति के के अनुकूल है वह सब इस संसार में भरा हुआ है। तुम्हें अवश्य मिलेगा।"

—एडवर्ड कारपेन्टर

ऊँचे पर सोता बहता है,
चलता है उस ओर।
जहाँ उसे मिलती है प्रियतम,
जल की राशि अथोर।
त्यों कल्याण प्रवाहित होता,
मान प्रकृति आदेश।
उस मानसप्रति जिसमें बसता,
विमल प्रसाद विशेष।

हम बाइबिल के अमूल्य वचनों पर विश्वास नहीं करते।

अपनी और दूसरी धर्म पुस्तकों में हम पढ़ते हैं कि नेक मनुष्य का सदा भला होता है किन्तु इस पर भी हमारा विश्वास नहीं है। बाइबिल बतलाती है, "ईश्वर हमारा चरवाहा है, हमें किसी बात की कमी न रहेगी; जो ईमानदारी के रास्ते पर चलते हैं उन्हें सब अच्छे पदार्थ मिलते हैं।" किन्तु शताब्दियों से ईसाइयों ने इसके विरुद्ध आचरण किया है। उन्होंने लोगों को उपदेश किया है कि ईश्वर पर जितना अधिक तुम्हारा प्रेम होगा और जितनी अधिक सेवा तुम उसकी करोगे उतना ही तुम्हें दुःख मिलेगा और जीवन् में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने जनता को कितनी बेहूदी बात का उपदेश किया है और कितनी आत्माओं के सुखों को नष्ट करके उन्हें दुखी बनाया है। परिणाम इसका यह हुआ कि वे बेचारे स्वयं ही दुखी नहीं रहते, किन्तु जहां कहीं मुँह लटकाये जाते हैं, वहां अपना बुरा प्रभाव दूसरों पर भी डालते हैं।

किसी समय में यह धर्म समझा जाता था कि हम सुखी न रहें और दूसरों को भी सुखी न रहने दें। किन्तु जब दुख का प्रवेश हुआ तो पादड़ी कहने लगे कि इस दुख के लिए हमें ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि उसने हमें शुद्ध करने के लिए यह दुख दिया है। जनता ने इस बात पर विश्वास किया कि जो ईश्वर को अधिक प्यारा होता है उसको अधिक दुख

मिलता है । यह समझ कर उन्होंने उन दुखों को सहा । याद रक्खो, ईश्वर हमें दुख नहीं देता और न वह हमें आपत्तियों में डालता और दरिद्र बनाता है । वास्तव में हमें दुख इस कारण मिलता है कि हम पाप करते हैं और बुरी-बुरी बातें सोचते हैं । इसी कारण हमारे पास आपत्तियां आती हैं । हम स्वयं अँधेरे में टटोलते हैं और भूल पर भूल करते हैं और फिर माथे पर हाथ रखकर रोते हैं और कहते हैं कि ईश्वर ने हमारी ऐसी दुर्गति की है ।

"ऐ सोने वालो उठो, अंधेरे से बाहर आओ । ईश्वर तुमको प्रकाश देगा ।" जब कोई महात्मा ईसा से किसी वस्तु की प्रार्थना करता था तो वे पूछते थे, "तुम्हें क्या चाहिए ?" यदि कोई कुछ मांगता था तो वह उसे शीघ्र मिलता था । वे अपने शिष्यों से कहते थे, "ईश्वर से मांगो तो मिलेगा, यही नहीं तुमको पूर्ण सुख होगा ।" यदि हम गरीब हों अथवा किसी परेशानी में हों, तो क्या हमें पूर्ण सुख मिल सकता है ? स्पष्ट उत्तर है, नहीं मिल सकता । तो क्या फिर हम कह सकते हैं कि हमें जीवन का पूर्ण सुख मिल रहा है । जब हमारे पास पैसा नहीं है; हमारा शरीर रोगी है, हमें सर्वाङ्ग शिक्षा नहीं मिली, हमारे लालायित हृदय में प्रेम और मित्रता का भाव नहीं है और इच्छा होते हुए भी हमारे जीवन के सुधार का

कोई अवसर नहीं मिला। जिन महात्मा ईसा के हम अपने को अनुयायी लगाते हैं उन्होंने कहा है:—"मैं अब आ गया हूँ, ताकि तुम्हें जीवन मिले और सुख की सामग्री प्राप्त हो, मुझे मालूम है कि तुम्हें कौन-कौन वस्तु चाहिए और वे सब वस्तुएँ तुम्हें दी जायँगी क्योंकि तुम्हारे जीवन को उनकी आवश्यकता है।"

पाठक वृन्द, आप बताइए, आपको किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता है। अपने को सजीव, सुखी और सफल बनाने के लिए आप को क्या चाहिए? क्या आप समाज के एक बलवान सफल और सुखी सदस्य बनना चाहते हैं? यदि आप चाहते हैं तो निस्सन्देह बन जायँगे।

ईश्वर का अपना मुंह लगा कोई नहीं है। उसका बनाया हुआ सूरज ऊँच और नीच सब को समान दृष्टि से रोशनी देता है। उसके भेजे हुए बादल समान दृष्टि से न्यायी और अन्यायी दोनों के घर में जल की वृष्टि करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि ईश्वर अपनी ओर से सब को अपनी वस्तु उदारता के साथ देता है। सूर्य मैली गली में भी उसी तरह चमकता है जिस तरह महल में चमकता है। बादल गरीबों के घरों में भी पानी उसी तरह बरसाता है जिस तरह अमीरों के बागीचों में बरसाता है। ईश्वर की दी हुई वस्तु सब को मिलती है। ईश्वर की दी हुई

वस्तु अमुक व्यक्ति को इतनी मिलनी चाहिए और अमुक को इतनी, यह भेद-भाव मनुष्य ने पैदा कर रक्खा है, मैं ईश्वर का अधिक प्यारा हूँ इसलिए मुझे अधिक मिलना चाहिए और तुम ईश्वर के कम प्यारे हो इसलिए तुम्हें कम मिलना चाहिए; यह भेद-भाव मनुष्य के मन की उपज है इसलिए इस भेद-भाव का कोई महत्त्व नहीं है।

सीधे अपने दिल की खोज करो और पता लगाओ कि जीवन को सफल बनाने के लिए तुममें किस वस्तु की कमी है। कमी की दवा तुम्हें अपने दिल में ही मिलेगी। जब वह मिल जाय तो उसे स्वीकार कर लो और ईश्वर को धन्यवाद दो। उस दवा रूपी शक्ति का प्रकाश तुम्हारे जीवन में बराबर होता जायगा, इसका विश्वास रखकर खुशी मनाओ। जीवन को योग्य बनाते रहोगे तो वह शक्ति तुम्हें अवश्य मिलेगी। जिस बात की तुम्हें इच्छा हो उसको ईश्वर से माँगो। विश्वास रक्खो कि वह तुम्हें मिलेगी।

ये बातें किसी सुनी सुनायी बात या सिद्धान्त के आधार पर नहीं लिखी जा रही हैं, किन्तु वे मेरी अपनी अनुभव की हुई हैं और मेरी जानी हुई हैं। लगभग १५ वर्ष पहिले इन बातों की सचाई का भान मेरे हृय में पहले-पहल हुआ था और इसके बाद मेरा विश्वास इस पर बराबर बढ़ता गया। जीवन में जिन-

जिन वस्तुओं की मैंने इच्छा की उनको मैंने प्राप्त कर लिया। हृदय ने जो चाहा और जिस पर विश्वास किया वह मुझे मिल गया। जब से मैंने "सीय राम मैं सब जग जानी। करौं प्रणाम जोर जुग पानी" का अनुभव किया, जब से मैंने यह जाना कि मेरा सम्बन्ध ईश्वर से क्या है, तब से प्रेम, मित्रता आदि सब आवश्यक गुण मुझे मिल गए। मुझे पूर्ण आशा है कि भविष्य में अभी और न मालूम कितनी बरकतें मुझे मिलेंगी। अभी तो मुझे जनता की सेवा करने का अधिक अवसर प्राप्त होगा, अभी मेरा कार्य्य-क्षेत्र और भी अधिक बढ़ेगा और अभी मुझे विद्योपार्जन का और अधिक समय मिलेगा। मेरी महत्वाकांक्षाओं के मार्ग में मेरे सिवाय कोई और रोड़े नहीं अटका सकता। मन की जिस शक्ति से मुझे हरएक बरकत मिलती है यदि मैं उसे अपने आलस्य, अविश्वास या भ्रष्टाचार से खराब करना चाहूँ तो कर सकती हूँ, किन्तु उसमें कोई दूसरा छेड़छाड़ नहीं कर सकता। यदि मैं स्वयं चाहूँ तो अपने नेक कामों का अंत कर सकती हूँ, पापात्मा बन सकती हूँ, चरित्र ऊँचे करने वाले विचारों को छोड़ सकती हूँ और भूल पर भूल कर सकती हूँ, इसमें कोई दूसरा बोल भी नहीं सकता, लेकिन ऐसा मैं करूँगी नहीं। इसलिए ऐ पाठक वृन्द, दुनिया की सारी वस्तुएँ मेरी हैं और आपकी हैं, इस पर आपको आनन्द मनाना चाहिए।

आप पापात्मा हरगिज़ नहीं हैं, जब तक आप स्वयम् वैसा बनना पसन्द न करें। आप तो ईश्वर के एक स्वतंत्र पुत्र हैं। आप गरीब और कमीने हरगिज़ नहीं हैं, जब तक आप स्वयं गरीबी और कमीनापन पसंद न करें। ईश्वर की दी हुई बरकतों में आपका पूरा-पूरा अधिकार है। यदि आपको सुख न मिले, यदि आपको कोई बरकत न मिले तो इसका अर्थ यह नहीं है कि ईश्वर आपसे अप्रसन्न है। आप धार्मिक होते भी दुखी नहीं हैं। ईश्वर के भक्त होते हुए भी यह आवश्यक नहीं है कि आप मुँह लटकाए रहें और उन वस्तुओं को पसन्द करें जो सुन्दर नहीं हैं। ये सब विचार धर्म से बहुत दूर हैं और इनमें भलाई, सचाई और धार्मिकता नहीं पाई जाती। ये सब विचार सचाई से बहुत दूर हैं और उन्हीं लोगों के मन में उठा करते हैं जो बैठे बैठे अट-शंट सोचा करते हैं और जीवन में भूल पर भूल करते रहते हैं। ऐसे ऐसे विचारों को छोड़ो और सुख, शान्ति, आनन्द और सफलता का जीवन व्यतीत करो। मज़बूत बनो और सचाई को पहिचानो। तुम निस्सन्देह स्वतन्त्र हो जाओगे।

"हर एक अच्छी वस्तु सड़क पर घूम रही है उस सच्चे नियम पर विश्वास करो जो हमारे जीवन की प्रत्येक दिशा में काम कर रहा है।"

परिस्थितियों पर विचारों का प्रभाव

यह बात निर्विवाद है कि परिस्थितियों का प्रभाव हमारे जीवन के सुख और दुख पर विशेष रूप से पड़ा करता है। इस सम्बन्ध में दो दृष्टिकोण हैं। पहिला दृष्टिकोण यह है कि हम और आप दोनों परिस्थितियों के दास हैं। इसके अनुयायियों को चारों ओर गरीबी, गन्दगी और गन्दे घर दिखलाई पड़ते हैं। शहर और अब देहातों के लोग भी, शराब, तम्बाकू आदि नशे की चीजें पीते और जुआ आदि दुर्व्यसनों में फँसे हुए उनको दिखलाई पड़ते हैं। वे ऐसे लोगों को गन्दी गलियों और अँधेरी कोठरियों में रहते हुए पाते हैं और फिर उनके ऐसे दुखी जीवन के लिए परिस्थितियों के सिर दोष मढ़ते हैं। कुछ समय हुआ एक सज्जन कह रहे थे "ऐसी परिस्थिति में कोई सुखमय जीवन किस प्रकार व्यतीत कर सकता है। उस गली को तो देखो जिसमें वह रहता है, उन लोगों को तो देखो जिनके साथ उसे रहना पड़ता है, और उस घर को तो देखो जिसमें वह रहता है।" ऐसे लोग इस बात को भूल जाते हैं कि उस मनुष्य ने उस गन्दी जगह को स्वयं रहने के लिए चुना है। गन्दी संगति और गन्दा घर उसने स्वयं पसन्द किया है। यदि वह ऐसी

परिस्थिति में रहता है तो दोष उसी मनुष्य का है। यदि आप किसी दिन किसी गन्दी गली में जाकर लोगों को देखें को इसकी सचाई आपको मालूम हो सकती है। देखो वह शराबी अपनी बुरी सोहबत और शराब पीने की आदत छोड़ रहा है। देखो अब वह प्रातःकाल अपने काम पर जाता है और हर सप्ताह अपना वेतन लाता है। उससे वह अपनी स्त्री और बच्चों के लिए कपड़ा और भोजन खरीदता है और घर के लिए और दूसरा सामान लाता है। अब वह गन्दी गली को छोड़कर अच्छे मुहल्ले में सफाई के साथ रहने लगा है। परिस्थिति का उस पर कोई असर नहीं पड़ा है। मन पर विजय पाकर उसने परिस्थितियों पर भी विजय प्राप्त करली है।

यह बात नितान्त असम्भव है कि एक साफ-सुथरा मनुष्य गन्दे स्थान में रह सके, एक विचारशील मनुष्य शराब पीने के लिए विवश किया जाय या एक परिश्रमी और वफादार सच्चे मनुष्य का पतन हो जाय। जिस मनुष्य ने अपने को अपने वश में कर लिया है उसको आप चाहे जहाँ रक्खें, वह अपने मन के अनुसार स्वयं परिस्थिति बना लेगा, पहिले मनुष्य को बदल दीजिये फिर परिस्थिति आपसे आप बदल जायगी।

अब दूसरे दृष्टिकोण के लोगों की बातों को सुनिये। कुछ शिक्षित लोग शिक्षित समाजों में रहते हैं, जहां उनको अनेक

सुविधाएँ रहती हैं, किन्तु तब भी वह शिकायत करते रहते हैं कि जिस स्थान के हम योग्य हैं वहां हमें रहने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हो रहा है। परिस्थितियाँ उनके अनुकूल नहीं हैं और काम उनके मन के अनुकूल नहीं है, इसलिए वे उसे पसन्द नहीं करते। उनका कहना है कि वे सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं, किन्तु कर नहीं पाते। ऐसे एक मनुष्य ने हम लोगों को कुछ समय हुआ लिखा था, 'मेरे साथियों की तो तरक्की हो गई लेकिन मेरी तरक्की अभी तक नहीं हुई, यद्यपि मैं कई वर्षों के यह काम कर रहा हूँ। मैं अपने काम से घृणा करता हूँ।" उसकी असफलता का कारण यही था कि वह अपने काम से घृणा करता था। हम लोगों ने उत्तर में उसे लिखा था, "यदि तुम चाहो तो तुम अपने वर्तमान काम को अधिक उपयोगी और अपनी तरक्की का कारण बना सकते हो। जिन परिस्थितियों में तुम रहते हो उनको अपने अनुकूल बनाओ। काम से घृणा करने के स्थान में उसे खूब मन लगाकर परिश्रम से करो। चारों ओर से चित्त को हटाकर आत्म-निरीक्षण करो, सोचो, मनन करो और ऐसा रास्ता निकालो जिससे तुम उस काम को प्रेम से करने लगो जिससे तुमने अभी तक घृणा किया है।"

वह मेरी नसीहत पूर्णरूप से मानकर काम करने लगा

जिसका थोड़े ही दिनों में बड़ा आश्चर्यजनक परिणाम हुआ। उसके अच्छे दिन आने लगे। उसने अपने उसी काम में दिलचस्पी लेना शुरू किया जिससे उसको पहिले घृणा थी। उसको अब आनन्द अनुभव होने लगा। उसका रहन सहन जादू की तरह एकदम बदल गया। दोस्तों और साथियों में उसे एक नई दिलचस्पी होने लगी, जिसका पहिले अभाव था उसको ऐसे अवसर मिलने लगे कि वह दूसरों को लाभ पहुँचा कर अपने को धन्य मान सके। और अब उसने उस काम को खुले दिल से करना शुरू किया जिसे वह नापसन्द करता था। इस मनुष्य ने अपने मन को बदल दिया और मन के बदलने से परिस्थितियां उसकी इच्छा के अनुसार उसके अनुकूल हो गईं। उसने मुझे लिखा कि जहां पहिले मुझे दुःख और निराशा दिखलाई पड़ती थी वहां अब मुझे प्रकाश, सुख और सफलता के दर्शन हो रहे हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि सुख और दुख का सम्बन्ध किसी स्थान विशेष से नहीं है किन्तु मनुष्य के मन से ही है।

स्मरण रक्खो, यदि तुम्हारा निर्वाह किसी एक परिस्थिति में नहीं हो सकता तो फिर दूसरी परिस्थिति में भी नहीं हो सकता। न मालूम कितने स्त्री-पुरुषों ने इस बात का अनुभव किया है और मेरे अनुभव में भी यही बात आई है कि सुख और सफलता उसी परिस्थिति से मिली हैं जिससे आशा नहीं थी। जिस सुख

और जिस बरकत को हमारा दिल चाहता था वह हाथ जोड़े हमारे मार्ग में खड़े थे और हमको पता तक नहीं था। उस सुख की खोज अब करो, उस बरकत की चाहना अब करो। जहाँ तुम हो वहीं तुमको ये सब मिल जायँगे, दिल खोल कर सचाई के साथ उस काम को दिलचस्पी से करो जिसमें तुम लगे हो। तुमको निस्सन्देह सुख और सफलता की प्राप्ति होगी। जो अपने को वश में करता है उसके पास सब सिद्धियां पहुँचती हैं। जो संयम के मार्ग में सचाई के साथ लगा हुआ है उसे प्रति मिनट और प्रति घंटे सफलता मिलती है।

पारस पत्थर

पुराने समय से लोग मानते आये हैं कि इस संसार में एक ऐसी भी अमूल्य वस्तु है जो यदि मिल जाय तो उसके केवल स्पर्श मात्र से जादू की तरह मंद से मंद धातु लोहा भी सोना हो जाता है और कुरूप भी रूपवान हो सकता है और उन्होंने जनता के सामने उसकी प्रशंसा में ज़मीन और आसमान के कुलावे मिला दिये। बहुतों ने यह कहा कि हमने बड़ी खोज की और अन्त में निराश होकर हमें यही कहना पड़ता है कि लोगों ने झूठ-मूठ उड़ा रक्खा है कि पारस है। वास्तव में पारस पत्थर इस संसार में नहीं है, यह कोरी कल्पना है।

पारस पत्थर की खोज में सब से बड़ी भूल यह हुई कि कुछ लोगों ने उसे एक जड़ स्पर्श करने वाली वस्तु मान रक्खा है जो बाहर किसी दूर देश में मिलती है और जिसको वे उठाकर अपने साथ जहाँ चाहे वहाँ ले जा सकते हैं। दूसरों का कहना है कि यह किसी देवी-देवता से मिलता है और उसी की पूजा में उन्होंने अपने को लगा रक्खा है। (उनकी कमजोरियों से लाभ उठाकर) कुछ ऐसे पैगम्बर खड़े हो गये, जो उन्हें पारस पत्थर देने का दम भरते हैं। इस प्रकार दुनिया में पैगम्बर के चलाए

बहुत से धर्म दिखलाई देने लगे जिनमें आपस में बड़ा मतभेद रहता है।

ऐसे कठवैद्य और अपने को पैग़म्बर कहने वाले लोग मौजूद हैं जो अपने देश में और विदेशों में एक काफी रकम लेकर पारस पत्थर बेंचने का दम भरते हैं और बहुत से लोग भी ऐसे हैं जो रकम देकर इसे खरीदने के लिए तैयार हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि ये भोले-भाले लोग इस बात को नहीं समझते कि उन पैग़म्बरों के पास यदि वह पारस पत्थर होता जिससे कुधातु सोना बन जाता है तो उन्हें रुपये लेकर बेचने को क्यों जरूरत पड़ती ! खरीदने वालों को बड़ी उत्सुकता रहती है कि कहीं कोई बतावे जहाँ जाकर वह पारस पत्थर उठा लावें, किन्तु खेद तो इस बात का है कि उनका रास्ता ग़लत है। साइमन के बारे में बाइबिल में इस प्रकार लिखा है:— "जब साइमन को मालूम हुआ कि पैग़म्बरों के हाथ रखने से उसकी आत्मा पवित्र हो गई है तो वह उन्हें धन देने लगा और बोला, कृपया मुझे भी वह शक्ति दीजिए जिसके द्वारा मैं भी हाथ रखकर दूसरों को पवित्र आत्मा बना सकूँ।"

जब वह उस महान शक्ति को रुपया देकर खरीदने के लिए तैयार हुआ तो उस पर बड़ी फटकार पड़ी। पारस पत्थर को लोग अभी तक नहीं पा सके हैं, यद्यपि उन्होंने उसके लिए प्रचुर

धन व्यय किया है और महान कष्ट सहन किया है। वह पत्थर वास्तव में बड़ा अमूल्य है। इस पत्थर में धातु को सोना बना देने की शक्ति वास्तव में है लेकिन यह उन्हीं को मिलता है जो अपने दिल और दिमाग में इसकी खोज करते हैं। वास्तव में यह मनुष्यों के विचारों में ही मिलता है।

'विचारों की शक्ति' कितनी महान है, इस विषय पर बहुत लिखा जा चुका है, लेकिन ऐसा मालूम होता है जैसे हमने कुछ भी नहीं लिखा है। इस महत्वपूर्ण विषय पर हम चाहे जितना लिखते जायँ किन्तु लिखने से हमारा पेट कभी नहीं भरता।

वास्तव में यह पत्थर सब लोगों के पास मौजूद है, किन्तु उनको मालूम नहीं है। यह अमूल्य रत्न उनकी हथेली में ही रक्खा हुआ है किन्तु वे जानते नहीं। उनको कहीं बाहर ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है। यह उनका है और उनके विचारों में मौजूद हैं। "जैसा मनुष्य विचार करता है वैसा ही वह बनता भी है।" हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि इस समय हम में जो योग्यता है या जिस पद पर हम काम कर रहे हैं वह हमारे विचारों की बदौलत है और आगे भी सम्पूर्ण उन्नति हमारे विचारों की बदौलत होगी। हमें अपने विचारों की बदौलत पारस पत्थर भी मिलेगा। अभी हम विचार कर रहे हैं और उसके मार्ग में हैं।

विचारों में नवीन शक्ति पैदा करने की बड़ी ताकत है। ईश्वर ने कहा, "प्रकाश हो जाय और प्रकाश हो गया।" हर एक ज़ोरदार वस्तु और हर एक जोरदार शब्द के पीछे ज़ोरदार विचार लगा हुआ है। जिस वस्तु को हम अपने चारों ओर देखते हैं उसकी उत्पत्ति हमारे विचारों से होती है। यह जो घर बना है उसका चित्र पहिले राज के दिमाग में पैदा हुआ था। यह जो जङ्गल लगा हुआ है, उसका चित्र पहिले बन रक्षक (Forester) के दिमाग़ में आया था। यह जो सामने मनोहर बाग दिखलाई पड़ता है, जिसमें घूमने के लिए अच्छी अच्छी घुमावदार सड़कें बनी हैं, जिसमें मखमली घास का बिछौना बिछा है, जिसमें फौवारे चल रहे हैं और जिसके भीतर किनारे-किनारे महकदार फूल लगे हैं, उसकी कल्पना पहिले किसी माली के दिमाग़ में पैदा हुई थी। उसी प्रकार हम जो कपड़े पहिनते हैं और जो मेज़ और कुरसी काम में लाते हैं, क्या वे सब पहिले दरज़ी या बढ़ई या हमारे दिमाग़ में नहीं पैदा हुये थे? पहिले इन वस्तुओं के चित्र दिमाग़ में बनते हैं और फिर उन्हें हमारी या हमारे भाइयों की अँगुलियाँ तैयार करती हैं। यह बात बिल्कुल ठीक है लेकिन जीवन की परिस्थितियों को, डर को, दुखों को गरीबी को, हमारी सीमित शक्ति को, विपत्तियों को और गुप्त ठठरियों को किसने बनाया है? इन्हें भी हमारे विचारों

ने ही बनाया है। जानकर या बेजाने हम जीवन की घटनाओं पर विचार करते रहते हैं। मुझे मालूम है कि डर के वायुमंडल में रहने के कारण और उसी पर लगातार विचार करने से बहुत से लोग रोगी हो गये हैं। उदाहरण लीजिए। वे बरसात से इसलिए डरते हैं कि ऐसा न हो, उनको सरदी लग जाय और जुकाम हो जाय। वे हवा से डरते रहते हैं। कहते हैं कि यदि वह पूर्व से बहेगी तो ठंडक पड़ेगी, उत्तर से बहेगी तो ठंडक और भी अधिक बढ़ जायगी, दक्षिण से बहेगी तो हमें बीमार कर देगी और यदि पश्चिम से बहेगी तो वर्षा होगी और हमें कष्ट होगा। यदि धूप अधिक हुई तो तुरन्त उसको रोकने और छाया करने के लिए परदे गिरा दिये जाते हैं। वे किसी वस्तु को खाते हुए भी डरते हैं; ऐसा न हो कि वह उन्हें हानि पहुँचा दे। वे व्यायाम करना भी नहीं पसन्द करते और न आराम करना पसन्द करते हैं, ऐसा न हो कि इससे उनको हानि पहुँच जाय। वे काम करते समय डरते रहते हैं कि कहीं उल्टा नतीजा न हो जाय। इस प्रकार डर का भूत उन पर हमेशा सवार रहता है जिसका परिणाम यह होता है कि उनका मन, उनका शरीर और उनकी आत्मा अगर रोगी नहीं तो कुंठित, कुरूप और बेकार तो अवश्य ही हो जाते हैं। जाब (Job) ने कहा है 'जिससे मैं डरता था वह आखिर आही गया। उन लोगों को धिक्कार है जो जीवन भर डर के दास बने रहते हैं।'

यदि ये लोग न डरते, यदि इन लोगों के विचार भिन्न होते तो इनका जीवन कितना सुखमय हुआ होता। यही बात सब अवगुणों के बारे में कही जा सकती है। स्त्री और पुरुष गरीबी के बारे में विचार करते रहते हैं, उसके बारे में बातचीत करते हैं, और उसी तरह से रहते हैं, यहाँ तक कि एक दिन गरीबी वास्तव में उनको धर दबोचती है और निमंत्रित मेहमान की तरह उनके घर में रहती है। कुछ लोग बीमारी के बारे में सोचा करते हैं। वे कहते हैं आज हमारी तबियत भारी है, आज हमारे सिर में दर्द है। कहते ही नहीं बीमारों की तरह रहते भी हैं। यहाँ तक कि एक दिन बीमारी का भूत उन पर सवार हो जाता है और निमन्त्रित मेहमान की तरह उनके घर में रहने लगता है। ये पीड़ित लोग समझते हैं कि हमीं को गरीब और बीमार बनना था, हमीं इसके लिए चुने गये थे और फिर अपने मिलने वालों से सहायता की प्रार्थना करते हैं। ठीक है हमें उनके साथ रहम अवश्य करना चाहिए। उन्होंने मन को गिरा कर अपनी वर्तमान शोचनीय हालत पैदा कर ली है इसलिए उनके साथ दया तो करनी ही चाहिए।

मैं चाहती हूँ कि मुझ में इतनी ताकत होती कि मैं इन लोगों को जगा देती और मेरे लेखों में इतना दम होता कि वे पुरानी रीति रिवाजों को तोड़ देते और पहले से ही सोचे हुए मार्ग को

न पकड़ते। मैं चाहती हूँ कि वे अपने दिल और दिमाग को लगाकर मेरी तरह इस सच्ची बात का अनुभव करते कि 'विचारों में जीवन को बदल देने की एक जबर्दस्त ताकत है।' यह ताकत स्त्री-पुरुष, बालक सब में मौजूद है, वे जिस तरह चाहें इसका प्रयोग कर सकते हैं। प्रत्येक मनुष्य स्वतन्त्रता से विचारता है और उसका परिणाम भी वही भोगता है। उसके मार्ग में कोई रोड़े नहीं अटका सकता।

पाठक वृन्द, आप चाहे जिस पद पर हों, अार अमीर हों या गरीब, किन्तु याद रखिए आपके पास पारस पत्थर है। आप चाहें तो आज से ही अपने मन,शरीर, और अपनी परिस्थितियों को सुधारकर अपना जीवन बनाना प्रारम्भ कर दें। आगे चल कर आप देखेंगे कि आपका जीवन रूपी निकृष्ट धातु बदल कर असली सोना हो गया है।

आपको यह आशा न करनी चाहिए कि हमको दुख, मूर्खता और पाबन्दियों से तुरन्त छुट्टी मिल जायगी। जीवन को सुखी और यशस्वी बनाने में यदि २०, ३०, ४०, या ५० वर्ष लग जायँ तो भी कोई हर्ज नहीं है। जीवन में उथल-पुथल होगी अवश्य, इसमें कोई संदेह न समझिए। संभव है वर्षों बीत जायँ और उन्नति न दिखलाई पड़े लेकिन आप को मालूम होता रहेगा कि सुधार का काम भीतर-भीतर चल रहा है, हमारी धारी

कठिनाइयाँ दूर हो रही हैं और हमारी मौलिक शक्ति का विकाश निर्विघ्न हो रहा है। जिस लक्ष्य को लेकर आपने विचार करना शुरू किया है उसकी पूर्ति अवश्य होगी, इसका स्मरण रखिए। आपके विचारों का अन्त इसी छोटे जीवन में न होगा। उनकी लड़ी बराबर जन्म जन्मान्तर में चलती जायगी। जो बीज आपने आज बोया है उसकी फसल आगे चलकर अवश्य तैयार होगी।

"यदि कोई पूछे कि तुम दुखी और सुखी क्यों होते हो तो उससे कह दो कि मैं दुखी इस वास्ते हूँ कि मैंने इतने वर्षों के बाद अपने को जाना है और सुखी इस वास्ते हूँ कि मेरा भविष्य अब बहुत अच्छा है।"

अरे यह जीवन कितना सुखी है। अरे यह जीवन कितना सुन्दर है। अरे यह जीवन कितनी विचित्र बातों और बरकतों से भरा है।

इमरसन ने क्या ही अच्छा कहा है:—

"मैं सम्पूर्ण पृथ्वी-मण्डल का स्वामी हूँ। सप्त तारा मण्डल और सूर्य की वार्षिक परिक्रमा का मैं संचालक हूँ। मैं सीजर का हाथ और प्लेटो का मस्तिष्क हूँ। मैं ईसा का हृदय और शेक्सपियर का गान हूँ।"

जब आपको सब मिल जाय तो

जब मनुष्य को शान्ति और आनन्द देने वाली अज्ञात मन की विचार-शक्ति मिल जाय तो उस समय उसे बहुत सँभल कर उसका प्रयोग करने की जरूरत है। ऐसा न हो कि उससे लाभ के बदले हानि पहुँचने लगे। मनुष्य यदि किसी भी शक्ति का उचित प्रयोग न जाने या जानकर करे तो वह उसे अपने ही स्वार्थ-पूर्ण उद्देश्य की पूर्ति में लगाकर बेकार कर सकता है।

जो शक्तियाँ मनुष्य के मन में छिपी हैं उनका कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य है। संसार के पैगम्बरों ने लोगों को सच्चे मार्ग का जीवन उसी तरह समझाया है जिस तरह वे समझ सके हैं। महात्मा ईसा ने जब जनसाधारण में उपदेश किया तो दृष्टान्त द्वारा उन्हें समझाया किन्तु जब वे अपने शिष्यों से बात करते थे तो कहते थे, "शिष्यो, ईश्वर के राज्य की गुप्त बातें तुमको मैं सीधे बतलाता हूँ, क्योंकि तुम बुद्धिमान हो, किन्तु जनता को मैं दृष्टान्त द्वारा बतलाता हूँ क्योंकि वह आँख रखती हुई भी नहीं देखती, कान रखती हुई भी नहीं सुनती।" सेण्टपाल एक स्थान में कहते हैं, "मैं जनता को उपदेश रूपी दूध और उपदेश रूपी ताकत पैदा करने वाला मांस दे रहा हूँ।" जब सेण्टपाल

के हृदय में प्रकाश हुआ तो एक आवाज ने उनसे पूछा, "जो तबियत हो, माँग लो, वह तुम्हें दी जायगी।" उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे बुद्धि और ज्ञान दो, जिन्हें मैं जनता की भलाई और सुख में लगा सकूँ।" इस तरह का निस्वार्थ उत्तर प्रत्येक मनुष्य नहीं दे सकता है।

इसमें कुछ भी शङ्का नहीं है कि विचारों में बड़ी जबर्दस्त ताकत है और स्त्री और पुरुष इस गुप्त ताकत के बल पर जैसा चाहें वैसा अपने को बना सकते हैं। हम परिस्थितियों को बेहतर बनाना चाहते हैं, हम अपना अनुभव और अधिक बढ़ाना चाहते हैं, हम मनुष्य के साथ का अपना सम्बन्ध और भी अच्छी करना चाहते हैं और यदि हमारी चले तो हम इन सब को एक दम बदल दें किन्तु हम में इतनी हिम्मत नहीं है कि चली आती हुई पुरानी प्रथा को मिटाकर हम उनको एक दम बदल दें। जब तक हम बाबा आदम के समय से चली आती हुई पुरानी प्रथा को मटियामेट नहीं करेंगे तब तक हमारे विचारों की जबर्दस्त ताकत की सचाई नहीं प्रमाणित होगी।

तिरस्कार के योग्य नहीं यह,
शक्ति अमित महिमाशाली।
विरोधियों का अहित भक्त का,
हित सदैव करने वाली।

जहाँ गूढ़ उपकार भाव है,
करती है आनन्द प्रदान।
पर पीड़न-व्यापार जहाँ है,
लाती वहाँ विपद्-व्यवधान।
सभी ठौर जाती है इसकी,
सर्वदर्शिनी पैनी दृष्टि।
सत्कार्यों के हित करती है,
उचित पारितोषिक की वृष्टि।
किन्तु जहाँ देखेगी कोई,
अनाचार, हो उग्र प्रचण्ड।
धर्म भाव की परम रक्षिका,
देगी पापी को भी दण्ड।
क्रोध नहीं है, क्षमा नहीं है,
उसमें लेश विकार नहीं।
उसकी निर्मल कार्य्यवाहियों—
में कुछ दोष प्रहार नहीं।
उसका न्याय नहीं रुक सकता,
हो विलम्ब से या सत्वर।
इच्छा होगी, आज करेगी,
या कुछ दिन गत होने पर।

अभी तक हमने जो विचार किये हैं या जो काम किये हैं उन्हीं के फल हम भोग रहे हैं (क्योंकि विचारों से ही काम किये जाते हैं और दोनों का सम्बन्ध-विच्छेद नहीं किया जा सकता) । यह बात बिलकुल सच है कि अभी तक हमने जो विचार किया है, वह विचार की महान् शक्ति को न समझते हुए किया है । विचार की महान् शक्ति से अभी तक हम बिल-कुल अनभिज्ञ थे । विचारों का परिणाम क्या होता है, हम इसे भी नहीं जानते थे । अनभिज्ञ होने से ही विचार की पुरानी शैली को हम अभी तक नहीं तोड़ सके हैं और इसलिए उसका फल भोग रहे है ।

"मनुष्य जैसा बोता है वैसा काटता है ।"

"जिस तरह का बर्ताव तुम दूसरों के साथ करोगे उसी प्रकार का बर्ताव दूसरे भी तुम्हारे साथ करेंगे ।"

जो अतीत जीवन की खेती हमने पहले बोई ।
वही काटनी होगी हमको अन्य उपाय न कोई ॥
लाभ मिले तो लेना होगा क्लेश उठानी होगी ।
कर्म्म हमारे हानि-योग्य तो मुँह की खानी होगी ॥
जन्म-जन्म में जहाँ किये हैं कर्म्म अहित हितकारी ।
अधिक-अधिक फलते रहते हैं दोनों ही अनुसारी ॥
पाई-पाई का हिसाब सब हमको करना होगा ।

छुट्टी नहीं मिलेगी हमको ऋण सब भरना होगा ॥
नव जीवन जो सम्मुख आता उसे ध्यान से देखो।
अमित विगत जीवन-संस्कृति का सार उन्हीं में लेखो ॥
पूर्व जीवनों के प्रसाद की छाया उनमें देखो।
पूर्व जीवनों के प्रसाद की माया उनमें देखो ॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि जितने पैगम्बर हुए हैं उन सबों ने इसी बात की शिक्षा दी है कि मनुष्य के विचार ही उसके जीवन के निर्माता हैं।

किन्तु आश्चर्य है कि लोग इस सचाई को कभी-कभी भूल जाते हैं और उसकी उपेक्षा करते हैं, उसे वह स्थान नहीं प्रदान करते जो वे अपनी ईश्वर-पूजा को देते हैं, न उसे कहीं लिखकर अपने पास रखते हैं। कुछ शताब्दियों के बाद वह सचाई फिर लोगों के सामने उपस्थित होती है और वे कहने लगते हैं कि एक नई चीज हमें मिली, एक ऐसी चीज मिली जो सब धर्मों से भिन्न है और उसे वे 'नई रोशनी' के नाम से पुकारते हैं। वास्तव में वह कोई नई चीज नहीं है। उसकी शिक्षा बुद्ध भगवान ने महात्मा ईसा के पाँच सौ वर्ष पहिले दी थी। उसकी शिक्षा सेंटपाल ने दी थी। उनके वचन ही हमारे कथन की सत्यता के ऐसे प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जिनमें किसी प्रकार की शङ्का की गुञ्जाइश नहीं है।

बुद्ध भगवान ने कहा था:—

"मन के विचारों ने हमें बनाया है। इस समय हम जो कुछ भी हैं उसके निर्माणकर्ता हमारे विचार हैं। यदि मनुष्य के मन में अपवित्र विचार हैं तो उसे दुख होता है। यदि मनुष्य के मन में पवित्र विचार है तो सुख परछाईं की तरह उसके पीछे-पीछे चलता है।"

महात्मा ईसा ने कहा था:—

"जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें वैसा ही तुम भी उनके साथ करो। लोगों को दो तो वे भी तुम्हें देंगे। उनकी सहायता करो तो वे भी तुम्हारी सहायता करेंगे। यही ईश्वरीय नियम है;"

इस महात्मा के शब्दों के भी यही स्पष्ट अर्थ हैं कि मन बड़ा ही प्रबल है। उसकी शक्ति के अनुसार ही मनुष्य का चरित्र निर्माण होता है।

"विषयी मन से मृत्यु होती है और पवित्र मन जीवन और शान्ति का दाता है।"

"मन में अहङ्कार न लाओ।"

"जिस प्रकार का मन महात्मा ईसा का था उसी प्रकार का मन तुम भी अपना बनाओ।"

"कार्य विचार का फूल है और सुख और दुख उसके फल

है। मनुष्य जिस प्रकार की खेती करता है उसी प्रकार के मीठे और कडुए फल पाता है।"

"मनुष्य का विकास आप से आप प्रकृति के कानून के अनुसार होता है। उसे कोई बना नहीं सकता। जिस प्रकार 'कार्य और कारण' का कानून द्रव्य-जगत में लागू है, उसी तरह विचार-जगत में भी वह कानून काम करता रहता है।

"मनुष्य स्वयं अपने को बनाता और बिगाड़ता है। विचार के हथियारखाने में वह ऐसे हथियार बनाता है जिनसे अपना ही विनाश करता है और ऐसे भी हथियार बनाता है जिनके द्वारा सुख और शान्ति का राजप्रसाद निर्माण भी करता है।"

"वर्तमान समय में अभी तक आत्मा के सम्बन्ध में जितनी अच्छी-अच्छी बातें कही गई हैं, उनमें से इससे बढ़कर कोई सुख-पूर्ण, विश्वास-पूर्ण और आशाजनक बात नहीं कही गई कि "मनुष्य अपने विचारों का स्वामी है। वह अपने चरित्र और भाग्य का निर्माता है और परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना सकता है।"

अतएव यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने में मौजूद इस बड़ी शक्ति का प्रयोग करना सीखें। यदि हम उसे अपने लाभ के लिए काम में लाते है तो हमें धिक्कार है। इसमें कोई शंका नहीं कि उसके प्रयोग से मनवांछित फल मिल सकता है

लेकिन इसे न भूलो कि हमारी इच्छा हमें सुख देने वाली हो, ऐसा न हो कि उससे हमें दुख मिले।

हमें अपना उद्धार स्वयं करना है। इसलिए हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि जैसा हमने अभी तक विचार किया है और उसके अनुसार जैसा हमने काम किया है, उसका फल हमें रत्ती-रत्ती भोगना पड़ेगा। इस फल को भोगते हुए हम अपनी कुछ भलाई भी कर सकते हैं। हम अच्छे विचारों द्वारा ऐसे बीज अब भी बो सकते हैं जिनकी फसल से भविष्य में हमें सुख मिल सके।

तुम्हारे हाथ में जब काँटा लगता है तो कितना चुभता है। वह तुम्हारा ही बोया हुआ है। संभव है वर्षों पहले तुमने बोया हो लेकिन बोया तुम्हीं ने है और इसलिए 'कार्य्य और कारण के कानून से वह तुम्हारे हाथ में लगता है और तुम्हें दुख होता है। इसको तुम्हें भोगना तो अवश्य ही पड़ेगा। लेकिन एक बात तुम कर सकते हो। उसी काँटे के बगल में प्रेम, शान्ति और सुखपूर्ण पवित्र विचारों के कुछ बीज बो सकते हो। समय पाकर खेती तैयार हो जायगी जिससे तुमको सुख होगा और काँटे के दुख को तुम सह सकोगे। ऐसा समय भी आ सकता है जब तुम्हारे जीवन से काँटा एकदम निकल जाय।

क्या आप अपने जीवन को सुखी और सफल बनाना

चाहते हैं ? तो ऐसा ज्ञान और ऐसी शक्ति पैदा कीजिए जिनके द्वारा आप अपने भाइयों के विश्वासपात्र बन जायँ और उनको लाभ पहुँचा सकें। दिन रात इसी विषय पर ध्यान दीजिये। शुद्ध, पवित्र और निःस्वार्थ विचारों का मंडल मन के ऊपर तान दीजिये। आचरण शुद्ध रखिये। उच्च लक्ष्य को हमेशा अपने सामने रखिये। विचारों के फलने की प्रतीक्षा कीजिये। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि आपके अच्छे दिन आवेंगे और आपके मन की इच्छा पूरी होगी। उसके पाने के योग्य अपने को बनाते रहिये, उसी के साँचे में अपने चरित्र को ढालते रहिये। उसी पर दिन रात सोचते, उसी के लिए काम करते रहिये, उसी की तैयारी में लगे रहिये, उसके आने की आशा कीजिये और फिर उसको धन्यवाद दीजिये। वह सड़क में खड़ी है और जितनी जल्द आप उसे बुलावेंगे उतनी जल्द वह आपके पास पहुँच जायगी। उसका सम्बन्ध उस शक्ति से है जो हमारे भीतर ही भीतर हम से दृढ़ता के साथ काम कराती रहती है।

"प्रार्थना के समय जिस बात की तुम इच्छा करोगे विश्वास करो कि वह तुम्हें मिलेगी।"

जो बरकत तुम्हें मिली है उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद दो। आत्मा को समय नहीं बाँध सकता। वह अमर है। जो लाभ अभी तक तुम्हारा हो चुका है वह तुम्हारा है। जितनी

गहराई से तुम इस पर विश्वास करोगे, जितना अधिक इस पर तुम आनन्द मनाओगे और ईश्वर को धन्यवाद दोगे, उतना ही अधिक इसकी सच्चाई का अनुभव तुम अपने जीवन में करोगे। जो कुछ मैं यहाँ लिख रही हूँ, उसकी सच्चाई को मैं अच्छी तरह जानती हूँ, क्योंकि उसका अनुभव जीवन में मैंने बार-बार किया है। मैंने बहुत-सी बरकतों को प्राप्त करने की इच्छा की, क्योंकि मैं जानती थी की मेरी भलाई होगी और वे मुझे मिल भी गईं। मैं उन्हीं पर बराबर सोचती रही, मैं उन्हीं के लिए परिश्रम करती रही, मैं उन्हीं के लिए अपने को योग्य बनाती रही और एक दिन मैंने उसे सामने खड़े हुए पाया। कभी-कभी तो मैंने देखा कि उसे पाने के लिए बहुत लम्बा रास्ता तय करना पड़ा और कई बार मैं अपने लक्ष्य से थोड़ी देर के लिए अलग हो गई। लेकिन मेरा काम ईश्वरीय कानून के अनुसार भीतर-भीतर होता रहा और ठीक समय आने पर वह मुझे मिल गई।

गेटे के शब्दों को याद रखिये, "अपनी इच्छाओं से हमेशा होशियार रहो, क्योंकि जिन वस्तुओं की तुम इच्छा करोगे वे अवश्य तुम्हें प्राप्त होंगी।"

इच्छा-पूर्त्ति के अनन्तर अपने पारस पत्थर को काम में लाओ। किन्तु उसका प्रयोग करने से पहले अपने हृदय की जाँच करो, अपने भावों की परख करो और अपनी इच्छा को

अच्छी तरह समझ लो। उसी इच्छा से तुम्हारा चरित्र सुदृढ़ होगा और तुम्हें ऐसे सुअवसर प्राप्त होंगे जिनसे तुम्हारे जीवन का दृष्टिकोण विस्तृत हो जायगा और तुम अपने जीवन को उच्च बना कर संसार की भलाई करते हुए ईश्वर का गुणानुवाद कर सकोगे।

कौन वहाँ बाधक हो सकता,
जहाँ अचल संकल्प महान।
भाग्यवाद संयोगवाद में
शक्ति कहाँ डालें व्यवधान?
खड़ा हिमालय भी हो पथ में,
तो उसको हटना होगा।
मनस्वियों के मानस-असि से,
किसे नहीं कटना होगा।
सरिता चली सिन्धु से मिलने,
उसे भला रोकेगा कौन?
सप्त अश्व रथ चढ़े तरणि को,
साहस कर टोकेगा कौन?
बुद्धि नहीं पायी है जिसने,
बका करे वह मनमाना।
जिसने करली अटल प्रतिज्ञा,

उसको तो आगे जाना।
निर्धारित जो लक्ष्य हो गया।
नहीं रंच डिगना उससे।
अपना जो उद्देश्य लेश भी,
कभी नहीं हिलना उससे।
स्वयं काल भी यदि आ जावे,
एक बार संकल्प प्रखर—
देख, सहम कर रुक जावेगा,
सोचेगा कुछ काल ठहर।